वेदों की खुशबू

ओ३म्
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 75	Year 7	Volume 10	October 2018 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6

संत कौन है।

एक बार एक जिज्ञासु ने एक संत से प्रश्न किया---क्या संसार के कार्यो में व्यस्त रहते हुये ईश्वर की अराधना सम्भव है?

क्यों नहीं?---संत ने हंसते हुये कहा। ईश्वर ने जब मनुष्य के लिये बाकी तीन आश्रमों के साथ गृहस्थ आश्रम बनाया है, यह तभी सम्भव है जब मनुष्य संसारिक कार्यो को करता हुआ अपने परिवार, देश व समाज के प्रति कर्तव्यों को करता हुआ जीवन यापन करें। यदि ईश्वर प्राप्ती के लिये सभी वैराग्य धारण कर लेंगे तो यह संसार कैसे चलेगा और प्राणीजगत आगे कैसे बढ़ेगा? ग्रामीण स्त्री को तुमने ढेंकी से चूढ़ा बनाते हुये तो देखा ही होगा। वह अपने एक हाथ से चूढ़ा पलटती जाती है तथा दूसरे हाथ से बच्चे को गोद में लेकर दूध पीलाती जाती है। यदि कोई पड़ोसिन या फिर कोई दूसरा व्यक्ति उसके पास आ जाता है, तब वह उससे बातें भी करती रहती है। ग्राहक आने पर उस से हिसाब भी करती है, किन्तु उसका कार्य पूर्ववत चलता रहता है।। इन सब कार्यो को करते हुये भी उसका ध्यान हर समय ओखली और मूसल में लगा रहता है। वह जानती है कि यदि थोड़ी सी भी असावधानी बरती तो मूसल हाथ पर गिरेगा और हाथ टूट जायेगा

उसी तरह मनुष्य को अपने कार्य करते रहना चाहिये पर मन भगवान में रहे। इस से सब से बड़ा फायदा

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

यह है कि उसके कार्यो में पवित्रता रहेगी। वह पाप पूर्ण और गलत कार्य करने से बचा रहेगा। यही फर्क है जिस व्यक्ति का ध्यान मालिक में हर समय होता है और जो मालिक से दूर रहता है। जो हम कार्य कर रहें है उन में पवित्रता और शुद्धि ही व्यक्ति के मन को प्रसन्नता देती है और उसे पाप से दूर रखती है।

इसी तरह एक बार संत अपने शिष्यों के साथ टहल रहे थे। देखा एक जगह मछुए जाल फैला कर मछलियां पकड़ रहे थे। एक मछुए के पास खाड़े हो गये और शिष्यों से बोले---------ध्यानपूर्वक इस जाल में फंसी मछलियों की गतीविधियों को देखो।

शिष्यों ने देखा कि कुछ मछलियां ऐसी हैं जो कि जाल में निश्चल पड़ी हैं, वे निकलने की कोई कोशिश नहीं कर रही हैं, जब कि कुछ मछलियां जाल से निकलनें की कोशिश करती रही पर उन्हें सफलता नहीं मिली जब कि कुछ ऐसी भी हैं जो कि जाल से मुक्त हो कर फिर जल में आकर क्रिड़ा कर रही थी। संत ने शिष्यों से कहा कि जिस प्रकार मछलियां तीन प्रकार की होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी तीन प्रकार के होते हैं। एक श्रेणी उन मनुष्यों की होती है, जिन की आत्मा ने बन्धन स्वीकार कर लिया होता है, वे इस भव–जाल से निकलने की बात सोचते ही नहीं, दसरी श्रेणी में वे मनुष्य आते हैं जो कि वीरों की तरह प्रयत्न तो करते हैं परन्तु मुक्ति से वचिंत रहते है। तीसरी श्रेणी उन की होती है जो अपने चरम प्रयत्न द्वारा मुक्ति प्राप्त कर लेते है।

संत रूके और फिर बोले-------इन तीन श्रेणीयों के सिवाय, एक श्रेणी और भी होती है, इस श्रेणी के मनुष्य उन मछलियों की तरह होते हैं जो कि जाल के निकट ही नहीं आते। इसलिये उनके फंसने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। इस श्रेणी के मनुष्य वे होते हैं जिन्हें ईश्वर की महान कृपा से शुरू से ही सत्संग अर्थात ईश्वर का संग मिला होता है, जैसे कि गुरूनानक देव, स्वामी दयानन्द सरस्वती । सत्संग द्वारा मनुष्य में ईश्वरिय गुण आने लगते हैं और उसकी प्रवृति एक संत का रूप धारण कर लेती है।

तभी एक शिष्य ने उत्सुकतावत पूछा-----गुरूदेव संत और आम मनुष्य में क्या फर्क होता है। संत ने सोचा और फिर बोले-----मेरे गुरू कहीं दूसरे शहर में जाने लगे, रेलवे स्टेशन पर खिड़की के सामने पक्ति में टिकट के लिये खड़े थे , तभी वहां एक भिखारिन आई, विपदा और अभावग्रस्तता उसके चेहरे पर झलक रही थी और हाथ जोड़ कर एक अच्छे अमीर व्यक्ति से बोली-----सेठजी, मेरे दोनो बच्चे कई दिनों से भूखे हैं और ठंड से ठिठुर रहे हैं, कुछ सहायता कर दिजीये। परन्तु उस व्यक्ति ने मुंह फेर लिया, मेरे गुरू देव पिछे पक्ति में खड़े सब सुन रहे थे। उन्होने तुरन्त जो थोड़े टिकट के पैसे और सफर के लिये कम्बल उन के पास था, उस भिखारिन को दे दिया और स्वयं अपने गन्तव्य के लिये पैदल ही चले गये। रास्ते मे जब पैसे की आवश्यकता पड़ी तो समान आदि ढो कर अपनी आवश्यकता पूरी की परन्तु भीख नहीं मांगी। महात्मा हंसराज भी ऐसे ही संत थे। उनके जीवन की असंखय घटनाये ऐसे कामों से भरी हुई है।

आत्मा और शरीर

मनमोहन कुमार आर्य

वेद और वैदिक परम्परा में ईश्वर व जीवात्मा को सनातन, अजन्मा, अमर, अविनाशी, जन्म व मरण के बन्धन में बन्धा हुआ और कर्मों का कर्ता और उसके फलों को भोगने वाला माना गया है। मनुष्य शरीर नहीं है। शरीर तो जड़ भौतिक पदार्थों से मिलकर बने हैं इनमें ज्ञान व कर्म करने की जो शक्ति है वह इनमें स्थित ज़ीवात्माओं के कारण है। यह आत्मा ही मनुष्य व अन्यप्राणियों के जन्म से पूर्व पिता व माता के शरीरों में रमात्मा की प्रेरणा द्वारा प्रविष्ट होती है। जब माता के गर्भ में आत्मा का शरीर पूर्ण रूप से बन जाता है, तगर्भ काल के बाद प्राणी का जन्म होता है।

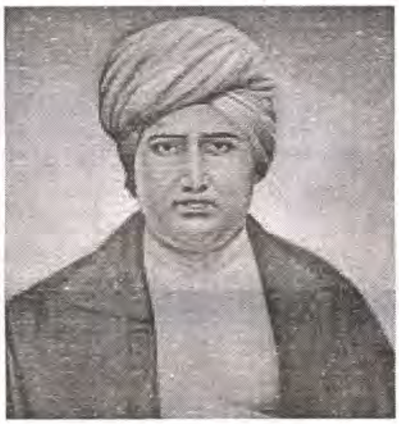

जीवित शरीर में आत्मा होने का प्रमाण यह है कि मृत्यु होने पर सभी प्राणियों का शरीर जड़वत् व निष्क्रिय हो जाता है। इसका कारण शरीर से चेतन जीवात्मा का निकल जाना होता है। जब तक शरीर में आत्मा होता है तब तक मनुष्य शरीर सक्रिय रहता और आत्मा उसमे रहकर सुख–दुःख भोगता रहता है। अनेक मनुष्यों को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास भी हो जाता है। वे पहले ही अपने परिजनों को बता देते हैं कि उनके जाने का समय आ गया है और उन्हें जाना होगा। अनेक महात्माओं को अपने अन्तिम समय पर स्वेच्छा से आत्मा को शरीर को निकालते भी देखा गया है। ऋषि दयानन्द ने विषपान के कारण जर्जरित शरीर से अपनी आत्मा को ईश्वर की प्रार्थना करते हुए बाहर निकाल दिया था। ऐसी घटनाओं से आत्मा का अस्तित्व होना सिद्ध है। वह जन्म से पूर्व माता के गर्भ में आती है और मृत्यु के समय शरीर को छोड़कर निकल जाती है। ईश्वर के कर्म–फल सिद्धान्त एवं जन्म विषयक नियमों के अनुसार कुछ समय बाद उस मृतक आत्मा का पुनर्जन्म हो जाता है।

एक प्रश्न प्रायः किया जाता है कि यदि यह हमारा पुनर्जन्म है तो हमें अपने पूर्वजन्म की स्मृतियां क्यों नहीं होतीं? इसका उत्तर यह है कि मृत्यु होने पर हमारा पूरा शरीर जिसमें हमारा मन, मस्तिष्क, बुद्धि, अन्तःकरण सहित सभी ज्ञानेन्द्रिया और कर्मेन्दियां होती हैं, आत्मा से पृथक हो जाते हैं और उनसे युक्त शरीर को अग्नि में नष्ट कर दिया जाता है। पूर्व शरीर के न रहने और उसकी आत्मा को नये जन्म से लगभग 10 महीनों तक तो मां के गर्भ में रहना ही पड़ता है। इन 10 महीनों व शैशव काल में मनुष्य को पूर्वजन्म की बातों की विस्मृति हो जाती है। हम जानते हैं कि हम जो शब्द व वाक्य बोलते हैं, उनमें से पांच–दस वाक्य बोलने के बाद यदि उन्हें दोहराना हो तो हम उन्हें उसी श्रृखंला व क्रमबद्धता में दोहरा नहीं सकते। हमने कल रात में क्या खाया, परसों दिन में व रात को क्या खाया था, हम प्रायः भूल जाते हैं। तीन–चार दिन पहले जो खाया–पीया होता है, वह किसी को स्मरण नहीं रहता। हमने कल, परसों वउससे पूर्व के दिनों में किस रंग व वस्त्र पहने थे, दो–चार दिनों में कब–कब किस–किस से मिले थे, यह भी याद नहीं रहता। यदि हमें दो चार–दिन की

बातें ही याद नहीं रहती, उन्हें हम भूल जाते हैं तो फिर पूर्वजन्म का स्मरण रहना भी सम्भव नहीं होता और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

मनुष्य का मन एक समय में एक ही व्यवहार करता है। उसे हर समय अहसास व विश्वास रहता है कि उसका अस्तित्व है। इस कारण भी वह पूर्वजन्म की स्मृतियों को स्मरण नहीं कर पाता। एक कारण यह भी है कि जन्म लेने से किशोर अवस्था में आने तक माता– पिता व अन्य जनों द्वारा कही जाने वाली अनेक बातों के संस्कार आत्मा व मन पर अंकित हो जाते हैं। इसलिए भी पुरानी स्मृतियां धूमिल पड़ जाती हैं। इस कारण पूर्वजन्म की स्मृतियां बनी नहीं रह पातीं।

परमात्मा ने मनुष्य की आत्मा के अल्पज्ञ होने के कारण भूलने का नियम बनाकर मनुष्य का लाभ ही किया है। मान लीजिए कि पूर्वजन्म में मैं राजा था तथा इस जन्म में अपने पूर्वजन्म के कर्मों के कारण मेरा जन्म एक निर्धन व अभावग्रस्त परिवार में हो गया। यदि मुझे पूर्वजन्म का स्मरण रहेगा तो मेरा यह जीवन पिछले जन्म को याद करके व इस जन्म की प्रतिकूल परिस्थितियों पर विचार करके दुःख मनाने में ही व्यतीत हो जायेगा। अतः हमें ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये कि हमें पूर्व जन्म का स्मरण नहीं हैं। हम जन्म के बाद से ही पूर्व स्मृतियों को विस्मृत कर नया जीवन व्यतीत करते हैं और इस जन्म का भरपूर आनन्द ले सकते हैं। यह ईश्वर की हम पर बहुत बड़ी कृपा है।

एक उदाहरण यह भी ले सकते हैं कि हमारे परिवार में किसी अत्यन्त प्रिय की मृत्यु हो जाये, तो उससे हम दुःखी रहेंगे। यदि हमें यह दुःख हर समय स्मरण रहेगा तो हम जीवन को धैर्य व शान्ति से चला नहीं पायेंगे। कोई भी घटना, प्रिय व अप्रिय घटती है, तो उसके बाद से ही हम उसे भूलना प्रारम्भ कर देते हैं और हमारा दुःख भी समय के साथ कम होता जाता है। अपने प्रिय की मृत्यु के समय परिवारजनों को जो दुःख होता है उतना दुःख कुछ घंटे बाद नहीं रहता। दो चार दिनों में तो मनुष्य सामान्य हो जाता है। इस प्रकार ईश्वर ने पुरानी घटनाओं को भूल जाने का जो स्वभाव हमें दिया है, वह हमारे लिए हितकर है।

पुनर्जन्म का प्रमाण इस बात में भी है कि संसार में कोई नया पदार्थ बनता नहीं है। इसका तात्पर्य है कि अभाव से भाव अर्थात् शून्य से किसी नये पदार्थ की उत्पत्ति नहीं होती। कोई मौलिक पदार्थ होगा, उसी से परमात्मा या मनुष्य रचना कर सकते हैं। हम मकान बनाते हैं तो हमें इसमें मिट्टी, ईंट, बजरी, चूना व सीमेंट तथा सरियों आदि की आवश्यकता होती है। यह परमात्मा ने पहले से ही सृष्टि में सुलभ करा रखे हैं। इसी प्रकार मनुष्य का शरीर जड़ प्रकृति के पदार्थों से परमात्मा माता के गर्भ में बनाता है जिसका जन्म लेने के बाद भोजन आदि करके विकास व विस्तार होता है।

जीवात्मा अनादि, अनुत्पन्न व नित्य है। यदि परमात्मा इसको बार–बार जन्म न दे तो इसे सुख नहीं मिल सकता। ईश्वर सामर्थ्यवान् है, उस पर दोष आयेगा यदि वह आत्मा को जन्म देने की सामर्थ्य होने पर भी जन्म न दे। ईश्वर हमसे अधिक ज्ञानी और बुद्धिमान है। वह हमें इस प्रकार की आलोचनाओं का अवसर ही नहीं देता। अतः वह आत्मा को मृत्यु के बाद शीघ्र जन्म देता है। किसी कारणवश जब शरीर आत्मा के रहने के योग्य नहीं रहता तो मृत्यु होती है और मनुष्यों व अन्य प्राणियों का जो कर्माशय होता है उसके अनुसार उसका पुनर्जन्म व नया जन्म होता है। जन्म–मरण का यह

चक्र अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। जन्म व मरण का यह चक्र कभी समाप्त होने वाला नहीं है। हां, अत्यधिक शुभ कर्मों से मनुष्य की आत्मा को मोक्ष मिल जाता है। मोक्ष की 31 नील 10 खरब और 40 अरब वर्षों की अवधि पूर्ण होने पर पुनः उसके जन्म–मरण का चक्र आरम्भ हो जाता है। हम भी अनादि काल से जन्म व मरण के बन्धन में बन्धे हुए हैं और मोक्ष मिलने तक और उसके बाद भी मोक्ष की अवधि पूरी होने पर हमारा जन्म व मरण का चक्र पुनः आरम्भ हो जायेगा।

इस प्रकार हमारा यह जन्म पूर्वजन्म का पुनर्जन्म है और हमारा आने वाला व उसके बाद के सभी जन्म पुनर्जन्म होंगे। जीवन, मरण तथा मोक्ष से जुड़े प्रश्नों को समझने के लिए ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश सहित

भजन

मनमोहन कुमार आर्य

मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।
न मिलती अगर दी हुई दात तेरी।
तो क्या थी ज़माने में औकात मेरी
यह बन्दा तो तेरे सहारे जीया है,
तेरा शुक्रिया है————————
यह जायदाद दी है, औलाद दी है,
मुसीबत में हर वक्त ईमदाद की है
तेरा ही दिया मैने खाया पिया है
तेरा शुक्रिया है————————
मेरा ही नहीं तू सभी का है दाता
सभी को सभी कुछ है देता दिलाता
जो खाली था दामन वो तूने भरा है
तेरा शुक्रिया है————————
मेरा भूल जाना तेरा न भुलाना
तेरी रहमतों का कहॉ है ठिकाना
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है
तेरा शुक्रिया है————————
तेरी बन्दगी से मैं बन्दा हू मालिक
तेरे ही कर्म से मैं ज़िन्दा हूं मालिक
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है
तेरा शुक्रिया है————————
मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

EVERY SINNER HAS A FUTURE

Neela Sood

Great Scientist Newton's famous third law has universal applicability that every action has an equal reaction, and inference can be that we reap what we sow. This universal law warns us of the consequences of bad karma, but it also encourages us to do good karma. If one has done something bad, mere repentance cannot undo it. Many people go through their lives carrying the burden of guilt or regret over past mistakes. For some, the weight is such that it crushes their sense of self-worth and they are unable to live a normal life, and they go to their grave haunted by the wrongs they have done. But one can learn from it and direct one's energy to doing good

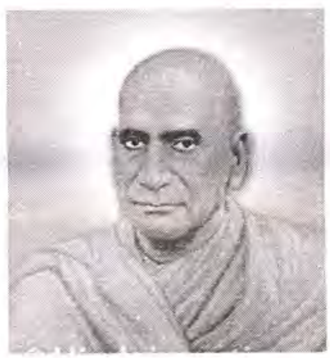

Positive and charitable actions not only benefit the needy but lift our souls as well. They keep the mind engaged in a healthy way, keep us away from negativity and help one forge good relations, and, when done repeatedly, create a habit of doing good which in turn become the part of our persona and character.

Soon, a time comes when good deeds outweigh past mistakes, and the person not only feels happy himself, but is also a source of support for others. This is how character transformation takes place. The best part is that people then start knowing one by his good deeds and his bad deeds are forgotten.

A great freedom fighter and the founder of the famous Gurukul Kangri Haridwar, Swami Shardhanand had almost all evils what a man can list but after listening to the discourse of Maharishi Dayanand Saraswati , the founder of Arya Samaj, he changed his ways completely. He relentlessly worked for the promotion of woman education, eradication of untouchability in the Indian society which even made great Baba B.R. Ambedkar to call Swami ji the greatest and the most sincere champion of dalits.

There are several examples in history of people leaving behind an ignoble past and achieving greatness. Similarly, Angulimala, a serial killer, became a monk after an encounter with the Buddha, and Valmiki gave up life as a robber and meditated for years in penance before he went on to compose the epic Ramayana. He is now revered as 'Adi Kavi', or first poet, as he is said to have invented the 'shloka', the first verse, which defined the form of Sanskrit poetry.

These examples show that no one is beyond redemption, and each one of us has the potential for spiritual progress regardless of our background. **As Oscar Wilde said, 'The only difference between saint and sinner is that every saint has a past, and every sinner has a future.'**

This is one reason criminal justice systems in some countries encourage the convicted to do something charitable to make amends for a mistake, or do community service fully or partially in lieu of other forms of punishment, such as imprisonment or paying a fine. Even where such a provision does not exist, convicts get reduced punishment if they show true remorse or cooperate with law enforcement agencies, and sentences are commuted if the convict has a record of good behaviour. Such measures aim to encourage reform, so that convicted criminals emerge better persons from their experience of crime and punishment.

While one cannot change one's past, its negative influence on the present and the future can be eliminated by changing one's way of thinking and behaviour. The key is to turn over a new leaf. A mistake does leave a stain on one's life, but repeatedly thinking about it is only darkens the stain. Instead, do good, so one can create bright spots that will eventually shine such that no one notices the stains.

REASONS TO BE VEGETARIAN

Krishan C. Garg

1. Healthy and Disease Free – Vegetarian food includes vegetables, fruits, dry fruits, grains, lentils, seeds, milk and milk products. It excludes all kinds of meat, fish and egg.

   As compared with non-vegetarian food, the vegetarian food is lower in fat and lower in cholesterol. It lowers blood pressure and is disease free. As a matter of fact the vegetarian food prevents diseases.
2. Structure of human body – Human teeth and digestive system are agreeable to vegetarian food and not to non-vegetarian food. Vegetarian food takes much less time to digest than non-vegetarian food.
3. Cruelty – Killing animals or birds for food or fun is a cruel act. Humans are not supposed to be cruel like wild animals. They are expected to be humane. They need to take care of all living beings and not kill them.
4. Nature – By nature no living being likes to be killed. They want to live and that is the birth gift to them from God. Killing is an unnatural act. Being most intelligent living beings humans are supposed to make the best use of the God's creation without hurting or harming them.
5. Pain – Animals and birds feel pain and pleasure the same way as we human do. So they feel intense pain when they are being killed. Under God's justice system the killers will get the same amount of pain as they are giving to the killed.
6. Water and Grains use – It takes 8 times more water and grains to produce meat than vegetarian food. Therefore non-vegetarian food is much more expensive than vegetarian food. It is gross misuse and sheer wastage of the vital resources.
7. Pollution – Killing animals or birds produces large amount of pollution. Producing vegetarian food does not produce any pollution.
8. (British Medical Journal) – The researchers admit that fruit and vegetables rich vegetarian diet boosts brain power.
9. A study of thousands of men and women revealed that those who stick to a vegetarian diet have IQ around 105 that is about five points higher than those who regularly eat meat.

   However, vegans – vegetarians who also avoid dairy products scored significantly lower.

averaging IQ score of 95.

10. George Bernard Shaw was a vegetarian. He said, "A mind of the caliber of mine cannot derive its nutriment from cows".
11. Benjamin Franklin stated that a vegetarian diet resulted in 'greater clearness of head and quicker comprehension'.
12. Not only the butchers, but also those who sell meat, buy meat, cook, serve and eat meat are responsible for the killings of the animals.
13. If slaughter houses have glass walls, no one will eat meat. This is because of the cruelty caused to the animals while slaughtering.
14. Vegetarianism is an intelligent, compassionate choice benefiting animals, people and the environment.

831 Sector 10
Panchkula, Haryana
0172-4010679

आर्य समाज सैक्टर 32 चण्डीगढ़ की एक अच्छी शुरुआत

अनिरूध

आर्य समाज सैक्टर 32 ने एक अच्छी शुरूआत की है। अब इस आर्य समाज में महीने के दूसरे ऐतवार को किसी वक्ता को न बुलाकर, बच्चों को बोलने का मौका दिया जाता है। नवम्बर महीने में मुझे भी शामिल होने का मौका मिला और मैं प्रभावित रहे बिना नहीं रह सका। 7–8 बच्चों ने स्वामी दयानन्द के जीवन की घटनाऐं, सुन्दर भजनं आदि सुनाये। बच्चों के मुख से यह सब सुनने का आनन्द ही कुछ और था। इसके तीने बड़े लाभ यह हैं कि-----पहला जब बच्चे आर्य समाज जैसी संस्था मे आते हैं तो उन्हें अच्छी बातें सुनने को मिलती है, संस्कार मिलते हैं जिस की आज के समय में बहुत आवश्यकता है, दूसरा आर्य समाज में बच्चे भी आते हैं । एक और बड़ा लाभ है कि बच्चों को मंच पर आने का मौका मिलता है, जो कि उनको प्रोत्साहित करता है।

सचिन

चण्डीगढ़ आर्य समाज का सौभाग्य है कि आर्य समाज के लिये समर्पित और उत्साही कुछे युवा सामने आयें हैं, इन में में एक है पुलिस में कार्यरत और आर्य समाज सैक्टर 32 के उपमन्त्री वेद पाल जी के सपुत्र सचिन कुमार और आर्य समाज सैक्टर सात से जुड़े अनिरूद्ध। अनिरूद्ध के माता श्रीमती शीला रानी जी भी बहुत समर्पित आर्य समाजी हैं वह स्वयं तो आती ही हैं परन्तु साथ में दो तीन स्त्रीयों को भी साथ लाती है।यह हमारा कर्तव्य बन जाता है कि आर्य समाज की कार्यकार्णियों में ऐसे उत्साही युवाओं को हिस्सा दें और आगे लायें। प्रधान और नपप्रधान अगर दोनों ही 75 से ऊपर हो तो कुछ ठीक नहीं लगता, एक हो तो बात मान ली जाए। युवक आगे होगें तो शैली में परिवर्तन होगा व नये विचार आयेंगे। एक पद ऐसे युवा को भी दें।

आर्य समाज सैक्टर 32 को मेंरी बधाई।

सफलता के रास्ते और हम

भारतेन्दु सूद

हम सब एक सफल जिंदगी जीना चाहते है। चाहे सफलता का नज़रिया सब का अलग अलग है। परन्तु हम में अधिक का सफलता का पैमाना है कि हम अपनी और परिवार की भौतिक आवश्यकताओ और ईच्छाओं को पूरा कर सकें। मकान हो, कार हो, बच्चे अच्छे स्कूलों और कालेजों मे शिक्षा ग्रहण कर जिन्दगी में सैटल हो जायें और हमारे पास भविष्य के लिये इतना हो कि किसी के आगे हाथ न पसारना पड़े, बुढापा आराम से कटे और कुछ अगली आने वाली पीढ़ीयों के लिये भी छोड़ जायें। मैं यहां यह बताना चाहूंगा कि परिवार का नजरिया भी भिन्न भिन्न है पर उस में भी अधिक परिवार को अपना आप, पति या पत्नी और बच्चों तक ही रखतें है।

इन सब को प्राप्त करने के लिये, अपने सुनहरी सपनों को पूरा करने के लिये आज का व्यक्ति जिन्दगी के दूसरें पहलूओं को दर किनारे कर दिन रात लगा हुआ है और मुश्कत कर रहा है। कठोर श्रम करते हैं, पति भी और पत्नि भी। पत्नि का जीवन तो और भी कठिन है, उसे दफतर के बाद घर का भी देखना होता है। लेकिन जिंदगी की सफलता इतनी आसान नहीं। हर व्यक्ति हर मोर्चे पर सफल भी नहीं होता। जिस को हमने अपना उदेश्य बनाया था वह तो गिने चुने लोगों को ही हासिल होती है। उदाहरण के लिये आई ऐ ऐस और दूसरी ऐलाइड सर्वसिज के लिये लाखों व्यक्ति हर साल मेहनत करते हैं, कोचिंग लेते है परन्तु चुने तो पांच छ सौ के करीब ही। इस बात को जो इस को उदेश्य बनाते हैं वह भी जानते हैं। परन्तु असफल होने के बाद वह हार नहीं मानते और दूसरी अटैम्पट के लिये परि़श्रम शुरू कर देते हैं। अक्सर देखा गया है कि जब वे ऐसे लगे रहते हैं तो कभी न कभी कुछ न कुछ प्राप्त कर लेते है। यही सफलता का ठीक रास्ता है। और जो एक असफलता के बाद मेहनत करना छोड़ देते हैं और निरोत्साहित हो जाते है, वे अपने उदेश्य को प्राप्त नहीं कर पाते यही असफलता है।

सफलता के कई रास्तें होते है।। लेकिन हमें यह देखना है कि जहां दरवाजो से पहुंचना है वहां हम दिवार तोड़ कर रास्ता बनाने की कोशिश तो नहीं कर रहे? यदि ऐसा कर रहें हैं तो हमारा ढंग ठीक नहीं। ऐसी सफलता हमें जीवन में महंगी पढ़ सकती है सदैव याद रखें **means justify the ends Martin Luther King had very rightly observed----" the means by which we live have outdistanced the ends for which we live---have given birth to missiles and misguided men.** इसलिये उदेश्य पूर्ती के लिये ठीक साधनों तक ही अपने आप को सीमित रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

सदैव याद रखें जहां एक रास्ता बन्द होता है वहां दूसरे रास्ते खुलते है। आवश्यकता यह है कि हम बन्द दरवाजे के साथ ही सिर न फोड़ते रहें और शांत होकर दूसरे दरवाजों को भी खोजें और ध्यान दें। कोई बात नहीं अगर मेहनत करने के बावजूद भी डाक्टर नहीं बन सके। ऐसा हालत में यह सोचिये कि ईश्वर ने हमारे लिये इस से भी अच्छा कोई केरियर चुना है। और उस तरह उसी लगन के साथ लग जायें। कुछ सालों बाद आप स्वयं ही महसूस करेंगे कि अव्छा हुआ मुझे डाक्टरी में सीट नहीं मिली। कुछ नामी व्यक्तियों की मिसाल दे रहा हूं।

मशहूर ऐक्टर अमिताभ बच्चन आल इंडिया रेडियों में उदघोषक की नोकरी के लिये नहीं चुने गये और फिल्मों मे कैरियर बनाने की सोची और अपने समय के सुपर स्टार बने। सुरों की मलिका लता मंगेशकर अभिनेत्री बनने आई थी । पहले की सभी आठ फिलमें फलाप हुई। आवाज अच्छी थी गायन को चुना और आज सुरों की मल्लिका है। हमारे भूतपूर्व राष्टपति अबदुल कलाम वायु सेना में फाइटर पायलट बनना चाहते थे। सफल उम्मीदवारों में उनका स्थान नौंवा था, जब कि जगह सिर्फ आठ थी। लेकिन उन्होने चलते रहने का संकल्प लिया था और नये दरवाजे की और चल पड़े। न केवल ऐक नामी वैज्ञानिक बने पर उन्हें देश का राष्ट्रपति बनाया गया और वह लाखों युवाओं के आदर्श है।

हम सब जीवन में रास्ता खोजने में लगे रहते हैं परन्तु बहुत बार जीवन ने हमारे लिये रास्ता चुना होता है और कोशिश करवाते करवाते, धक्के खिलाते खिलाते जीवन हमें उस रास्ते पर ले आता है।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाये,
इस तरह न खर्चो कि कर्ज हो जाये,
इस तरह न खाओ कि मर्ज़ हो जाये,

इस तरह न बोलो कि कलेश हो जाये,
इस तरह न चलो कि देर हो जाये,
इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाये ।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

मंदिर घर के अंदर नहीं, घर और मन को ही मंदिर बनाइए

सीता राम गुप्ता

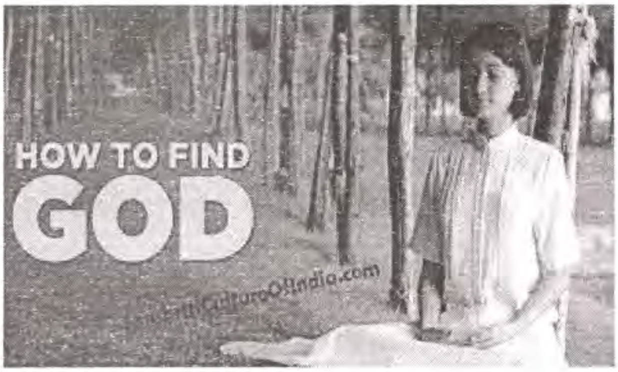

लोग पूजा–पाठ के लिए मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च अथवा अन्य धार्मिक स्थानों पर जाते हैं। लोगों की इसी धार्मिक आस्था के कारण स्थान–स्थान पर अनेकानेक मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च अथवा अन्य धार्मिक स्थल मिल जाएँगे। चाहे कई–कई कोस तक कोई चिकित्सालय अथवा विद्यालय न हो कोई न कोई देवालय अवष्य ही मिल जाएगा। चाहे घर छोटा ही क्यों न हो श्रद्धालु लोग अपने छोटे–छोटे घरों में भी कोई एक कोना मंदिर अथवा पूजा–पाठ के लिए नियत कर लेते हैं। मूर्तियों को रखने के लिए स्थानाभाव है तो एक दीवार पर कैलेण्डर टांग कर उसी से मंदिर का काम ले लेते हैं।

कुछ लोग तो अपने घरों में ही अलग से एक पूजा–कक्ष अथवा मंदिर बनवा लेते हैं। कुछ समृद्ध लोग घर के अंदर अलग से पूरा मंदिर परिसर ही बनवा डालते हैं और उसमें नयनाभिराम मूर्तियाँ भी स्थापित करवा देते हैं। घर तो घर कई सरकारी कार्यालयों के परिसर तक में मंदिर बने देखे जा सकते हैं और विषेश अवसरों पर भजन–कीर्तन और भण्डारे का आयोजन भी होता रहता है। बड़े–बड़े षहरों और महानगरों के उपासना–गृहों के तो क्या कहने! एक से बढ़ कर एक विषाल एवं भव्य प्रसादनुमा भवन तथा क़ीमती पत्थरों से निर्मित व हीरे–जवाहिरातों से जड़ित नयनाभिराम मूर्तियाँ। आजकल तो कई मंदिर ऐसे भी बन गए हैं जहाँ श्रद्धालुओं का नहीं दर्षनार्थियों का ताँता लगा रहता है। तभी तो ईंट–पत्थरों से निर्मित मंदिर–मस्जिद की उपयोगिता का खंडन करते हुए कबीर ने कहा है :

कांकर–पाथर जोड़ि के, मस्जिद लई चुनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहरा भया ख़ुदाय।

प्रष्न उठता है कि क्या पूजा–पाठ अथवा इबादत के लिए विषाल भव्य मंदिर व आकर्शक मूर्तियाँ अथवा अन्य पूजा–स्थल अनिवार्य हैं? क्या इनके अभाव में पूजा–पाठ या इबादत अथवा भक्ति–भावना का विकास संभव नहीं? आख़िर पूजा–स्थल की आवष्यकता ही क्या है? मंदिर को ही लीजिए। मंदिर एक पावन स्थल माना जाता है इसमें संदेह नहीं लेकिन मंदिर को ये पावनता कौन प्रदान करता है? यह श्रद्धालुओं अथवा आगंतुकों की भावना ही तो है जो किसी पूजा–स्थल अथवा इबादतगाह को पवित्रता का दर्जा देती है। यदि भावना षुद्ध–सात्त्विक है तो ईंट–पत्थरों से बने निर्जीव ढाँचे की क्या आवष्यकता है? वास्तव में षुद्ध–सात्त्विक भावना से युक्त व्यक्ति जहाँ निवास करेगा वही स्थल मंदिर सदृष हो जाएगा। जिस घर में घर के सभी सदस्य षुद्ध–सात्त्विक भावना से निवास करेंगे वह घर मंदिर सदृष हो जाएगा इसमें भी संदेह नहीं। मंदिर अथवा पूजा स्थल साधन हैं षुद्ध–सात्त्विक भावना का विकास करने

के, साध्य नहीं।

दूर–दराज़ के गाँवों अथवा आदिवासी क्षेत्रों में क्या होता है? किसी पेड़ के नीचे एक चबूतरा–सा बनाकर उस पर कोई अनगढ़–सा पत्थर रख दिया। लोगों ने उसे ही ग्रामदेवता अथवा भगवान मान लिया और और लगे पूजने। भवन और मूर्ति की क्या आवष्यकता है? अब तो भगवानों की सोने–चाँदी की भारी–भरकम मूर्तियाँ बनवाने का प्रचलन है, फैषन है। एक भगवान दूसरे से बाज़ी मार लेना चाहता है। मंदिरों के नाम पर हज़ारों–हज़ार करोड़ों की संपत्ति जमा है।

साईं बाबा जो स्वयं मूर्ति पूजा और पाखण्ड के विरोधी थे उनकी मूर्तियाँ और भव्य मंदिर व धाम सबसे ज़्यादा हैं। हों भी क्यों न? एक–एक मंदिर से लाखों–करोड़ों की कमाई हो रही है। भोली–भाली जनता को धर्म के नाम पर बेवकूफ बनाया जा रहा है। उन्हें धर्मांध बनाकर अपना उल्लू सीधा किया जा रहा है। जो भी हो आज अधिकांष धर्म स्थल व्यक्ति और समाज के लिए आध्यात्मिक उन्नति के साधन व केंद्र न रह कर कुछ लोगों के लिए अय्याषी के अड्डे व मोटी कमाई के स्रोत बन गए हैं। यदि इन्हें रोकना है तो हर घर को मंदिर बनना ही होगा।

गृह, मकान, सदन, निकेत, भवन, प्रासाद, मंदिर आदि सभी षब्द घर के ही तो पर्यायवाची हैं। ये सभी षब्द कमोबेश मंदिर या पूजा–स्थल के पर्यायवाची भी हैं। विद्यालय को विद्या का मंदिर कहा जाता है। हमारा घर किसी मंदिर से कम नहीं होता लेकिन ईंट–गारे अथवा संगमरमर से निर्मित कोई मकान अथवा भव्य प्रासाद भी वास्तव में घर नहीं कहला सकता जब तक कि उस स्थान पर रहने वालों के बीच सामंजस्य न हो। इस सामंजस्य का निर्माण कौन करता है? इस सामंजस्य का निर्माण करती है घर में रहने वाले सदस्यों की भावना, उनका प्रेम। साथ रहने वालों में सहयोग की भावना, उनका निष्छल प्रेम, एक दूसरे के प्रति समर्पण का भाव एक भव्य इमारत को ही नहीं एक झोंपड़ी को भी घर बनाने में सक्षम है। ऐसे ही किसी भी घर को मंदिर कहा जा सकता है।

जब ईंट–गारे अथवा संगमरमर से निर्मित कोई मकान अथवा भवन घर नहीं हो सकता तब ईंट–गारे अथवा संगमरमर से निर्मित कोई भवन भी वास्तव में मंदिर नहीं हो सकता। सात्त्विक भावों की सृष्टि ही किसी भवन को घर अथवा मंदिर या पूजा–स्थल बनाने में सक्षम है। घर एक मंदिर ही है और उसमें प्यार की, सात्त्विक भावों की पूजा ही तो होती है फिर ऐसे घर में भगवान की पूजा क्यों नहीं हो सकती? व्यक्ति जहाँ भी रहता है अथवा काम करता है वह स्थान भी तो निर्मल व पावन–पवित्र होना ही चाहिए। कार्य को पूजा बतलाया गया है अतः एक कार्यस्थल भी किसी भी तरह मंदिर से कम महत्त्व नहीं रखता।

जिस कार्यस्थल पर ईमानदारी से कार्य होता है, जहाँ काम करने वालों का किसी भी प्रकार का षोशण नहीं होता वह कार्यस्थल सचमुच मंदिर के समान है। जिस कार्यालय में भ्रष्टाचार का साम्राज्य नहीं है, कर्मचारी और अधिकारी ईमानदारी से जनता की सेवा करने को तत्पर रहते हैं वह कार्यालय

भी मंदिर ही है। कार्यालयों में कार्यरत कुछ श्रद्धालुजन कार्यालयों में कार्य के समय में अपना काम छोड देंगे लेकिन पूजागृह अथवा सत्संग जाना नहीं छोड़ेंगे। घर पर असहाय बूढ़े–बीमार माता–पिता को अकेला छोड़कर पूजा–पाठ, सत्संग–साधना और तीर्थ–यात्रा में लगे रहेंगे। ऐसी पूजा–पाठ, सत्संग–साधना और तीर्थ–यात्रा मात्र आडंबर है। माता–पिता और गुरू ही हैं वास्तविक तीर्थ।

उस घर से बड़ा कोई मंदिर नहीं जहाँ संबंधों की गरिमा को महत्त्व दिया जाता हो। वास्तविक धर्म का पालन चार धाम की यात्रा में नहीं अपितु अपने कर्तव्य के पालन तथा घर को मंदिर सदृष बनाने में ही है। हाँ घर को यदि सचमुच मंदिर बनाना है तो पहले मन को मंदिर बनाना होगा। मन को मंदिर बनाने का अर्थ है उसे मंदिर की तरह पवित्र बनाना, उसे विकारों से रहित करना। मन–मंदिर बनने के बाद किसी स्थूल मंदिर की आवष्यकता ही नहीं रहती क्योंकि जिसका मन मंदिर हो गया उसके लिए ये समस्त ब्रह्माण्ड एक मंदिर हो जाता है और इस में उपस्थित प्राणियों की सेवा उसका धर्म।

एक और प्रष्न उठता है कि इन विभिन्न मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारों, चर्च अथवा अन्य धार्मिक स्थानों का प्रारंभ कब हुआ। जब से सभ्यता और संस्कृति का विकास प्रारंभ हुआ वास्तव में तभी से विभिन्न रूपों में पूजा–पाठ तथा पूजा–स्थल भी अस्तित्व में आए। मंदिर बनने लगे। मूर्तियाँ लगने लगीं। पूजा–पाठ प्रारंभ हुआ। यहाँ आकर मनुष्य अच्छा अनुभव करने लगा। मंदिरों के सात्त्विक परिवेष ने उसके मन को भी निर्मल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। प्रार्थना के द्वारा की जाने वाली उसकी स्वीकारोक्तियाँ वास्तविकता में बदलने लगीं तो पूजा–स्थल और पूजा–पाठ में उसका विष्वास और सुदृढ़ होने लगा। उसके विष्वासाधिक्य का प्रभाव धर्म स्थलों व पूजा–पाठ के स्वरूप पर भी पड़ा। मंदिरों का रूपाकार विषाल होने लगा। मंदिरों में नयनयभिराम मूर्तियाँ लगने लगीं। मूर्तियों को प्रसन्न करने के लिए पूजा–पाठ के साथ–साथ रंगारंग कार्यक्रम भी प्रारंभ हुए।

कालांतर में मंदिरों में स्थायी रूप से नृत्यांगनाओं की व्यवस्था की जाने गली। देवदासी जैसी प्रथाओं का प्रारंभ हुआ। धर्म के नाम पर लोगों को अंधश्रद्धा की ओर धकेला जाने लगा। नृत्यांगनाओं के रूप में देवदासियाँ मूर्ति रूपी ईष्वर को तो क्या प्रसन्न करतीं हाँ पण्डे–पुजारियों की वासनापूर्ति का माध्यम ज़रूर बनती गईं। आज ज़रूरत है ऐसी अंधश्रद्धा से बचने की। ऐसी प्रथा के बहिश्कार की जो देवदासी जैसी कुप्रथा को बढ़ावा दे। ज़रूरत है धर्म की विकृति को समाप्त करने की। ज़रूरत है तो कन्याओं को देवदासियाँ न बनाकर उन्हें हर प्रकार के षोशण से बचाने की, उन्हें पढ़ा–लिखाकर अच्छा नागरिक बनाने की। यह तभी संभव है जब हमारे घर मंदिर बन जाएँ। ऐसा घर ही वास्तविक मंदिर कहलाने का अधिकारी होगा जो धर्म के नाम पर पनपते अधर्म और अनर्थ को रोकने में सक्षम हो।

******

1. *पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।*

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

2. *विज्ञापन से सम्पादक के विचारों का मिलना, आवश्यक नहीं सम्पादक उस की किसी भी प्रकार जिम्मेवारी नही लेता।*

क्या है महर्षि दयानन्द के अनुसार मनुष्य का धर्म?

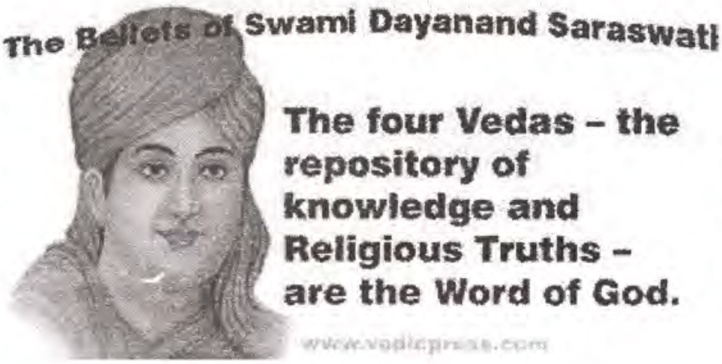

महर्षि दयानन्द की दृष्टी में धर्म को देश, जाति, वर्ग, में सीमित नहीं किया जा सकता। मनुष्य मात्र के लिये व्यवहार में लाने योग्य धर्म एक ही होता है, उसे मानव धर्म कहें या विश्व धर्म कहें। धर्म का सार मानवता है, जिसका न तो धार्मिक संगठनो से कुछ लेना देना है,न ही उस मन से जो अन्धविश्वास में फसा हुआ है या फिर अन्धविश्वास से पैदा हुये किसी मत मतान्तर में खोया हुआ है।

उनके अनुसार धर्म के गुण हैं------मन,वचन,कर्म से एक होना, निष्पक्ष बर्ताव करना, सदव्यवहार करना, किसी से द्वेष ईर्ष्या व घृणा न करना, परोपकार करना, सत्य व्यवहार करना व वेदों के अनुकूल आचरण करना आदि। यह सभी गुण पूर्ण रूप से वैदिक धर्म में मिलते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में बहुत ही सरल शब्दों में बताया है कि 'धर्म वह है जिसमें परस्पर किसी का विरोध न हो अर्थात धर्म सार्वभौम है जिसका किसी विशेष देश, जाति तथा काल से खास संबंध नही होता। जो ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये ही मानने योग्य है, वह 'धर्म' कहलाता हैं।

जो न्यायचरण सबके हित का करना आदि कर्म हैं उनको 'धर्म' और जो अन्यायचरण सब के अहित के काम करने हैं उनको 'अधर्म' जानो (व्यवहारभानु)। धर्म की सरल परिभाषा है कि 'स्वस्य च प्रियमात्मनः'

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य के लिये कुछ कर्तव्य बतायें हें। यह भी मनुष्य के धर्म का अंग है।

संसार का उपकार करने के लिये कटिबध रहना मनुष्य का धर्म है। इस कार्य को करने के लिये मनुष्य को सारे विश्व को अपना परिवार मानने के लिये कहा गया है, अर्थात धर्म, जाति, देश, भाषा व रंग के भेदभाव से उपर उठकर सबका कल्याण करे। मनुष्य अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझे। यह तभी सम्भव है जब सम्पन लोग अपने से नीचे वर्ग के लोगों को उपर उठाने की कोशिश करें।

मनुष्य सभी कार्य सत्य व असत्य को विचार कर धर्मानुसार करे। अर्थात लोभ, मोह, काम, कोध के वशीभूत होकर न करे। ऐसा करने में भले ही उसका कुछ समय के लिये नुकसान क्यूं न हो, कयूंकि धर्म के नियमों पर चलना ही अन्त में सुखकारी है। सत्य के महत्व के बारे में महर्षि दयानन्द लिखते हैं------सत्य आचरण का ठीक ठीक फल यह है

कि जब मनुष्य निश्चय करके केवल सत्य ही मानता, बोलता व करता है तो वह जो जो काम करता है और करना चाहता है वे सब सफल होते हैं।

मनुष्य से आवाहन किया गया है कि सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने में वह सदैव तैयार रहे।

जीवन को यज्ञमय बनाना भी मनुष्य का धर्म है।

महर्षि दयानन्द का कहना था कि अपने दैनिक जीवन को यज्ञमय बनाना मनुष्य का धर्म है। 'यज्ञ' शब्द का अर्थ है त्याग व दान अर्थात कल्याण व परोपकार का कार्य। ''यज्ञ' वै श्रेष्ठ तमं कर्म' कहकर महर्षि दयानन्द ने मनुष्य को अग्नि की लपटों के सामान निरन्तर उँचा उठने,प्रकाशवान बने रहने तथा अग्नि के सामान तेजस्वी बने रहने का सन्देश दिया हैं।

जिन पांच यज्ञों का मनुष्य को दैनिक जीवन में पालन करने के लिये कहा गया है वे है,; पहला, ब्रहम यज्ञ---प्रातः काल में उपासना द्वारा परमात्मा, जो कि हमें प्राण देता है, पालता है व रक्षा करता है, का धन्यबाद करना व श्रेष्ठ बुद्धि के लिये व सारे प्राणी जगत कीं सुख शन्ति के लिये प्रार्थना करना। दूसरा, अग्नि होत्र---- अग्नि होत्र द्वारा पर्यावरण को शुद्ध करने के साथ साथ अग्नि की लपटों के सामान निरन्तर उँचा उठने,प्रकाशवान बने रहने तथा अग्नि के सामान तेजस्वी बने रहने के लिये प्रभु की स्तुति करना। तीसरा पितृ यज्ञ------घर मे माता पिता, दादा दादी, नाना नानी व दूसरे बर्जुगो की सेवा करना। चौथा अतिथि यज्ञ------- घर मे आये अतिथि व विद्वान की सेवा करना पांचवा बलिवैश्देव यज्ञ-------जो समाज मे असहाय हैं उनकी सेवा व सहायता। संसार में बसने वाले पक्षी, पशु के प्रति दया व सेवा आदि।

यदि ऐसे अच्छे विचारों को छोड़ कर भारत की जनता बाबों के चक्कर में घूम कर मूर्ख बनी हुई है तो इस के लिये हम आर्य समाजी जिम्मेवार है जिन्होने आर्य समाज को एक कर्मकाढड तक ही सीमित कर दिया। जरा विचार करें।

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172-2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डबार, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL & All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sector 20-D, Chandigarh

PLEASURE AND VIRTUE OF CONTENTMENT

T.R. Goyal

In 1958, I was posted on Rajasthan Canal Project of Rajasthan Irrigation Department at Tibbi, 25 km from Hanumangarh junction on Hanumangarh-Sadulpur rail section. At the Tibbi railway station, the irrigation department had set up a coal dump. Coal was transported from mines by goods train and stored there. From there, it was allotted to kiln contractors at government rates who had established kilns along the canal and were obliged to supply tiles and bricks at approved rates for lining of the canal which was under construction at that time.

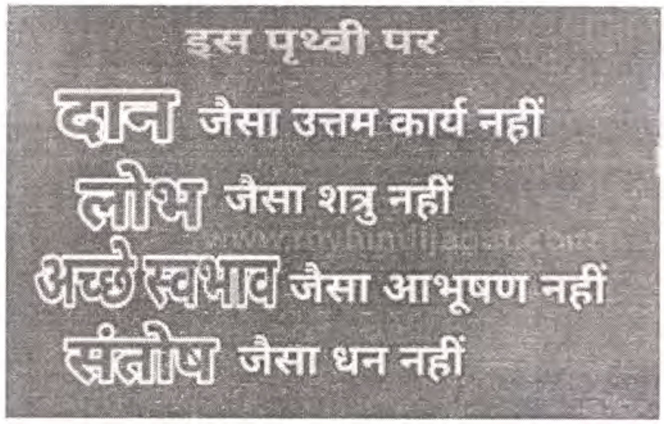

For watch and ward of the coal against pilferage, government had appointed a chowkidar at the dump site. His name was Bhanwar Singh. Government had provided him a waterproof tent, torch, uniform, kerosene oil for lantern, a stick, jute mattress and other necessary items of life. At that time the monthly salary of a chowkidar was Rs.55 (Rs. 30 as basic pay and Rs 25 as dearness allowance). In the first week of every month, his son would come to him with monthly ration for the father (chowkidar) such as 8 kg atta, 2 soaps, 2 kg dal, chaipatti, jaggery (gud), aaachar, 2 match boxes and other necessities. Bhanwar Singh had also kept a goat which in addition to meeting his milk needs, supplemented his income by Rs.5 per month. His son took the whole pay from his father for running the family expenses leaving with him Rs.5 for tobacco and biddis etc.

Sometimes on our coming back from Hanumangarh to Tibbi which was our headquarter after the day long work, he would always greet us with a smile and respect. When we asked him how he was feeling, his prompt reply was that God has been very kind to him and his family that he had got a government job and was feeling extremely happy and contended. Bhanwar Singh was an epitome of satisfaction and such people are very rare these days.

Today a majority of the well to do and affluent people are in distress and tension despite having all the blessings and comforts of life. They want rapid promotion in their jobs and sharp increase in pay perks every year, name and fame etc and they are not satisfied at any level. That is the reason they are deprived of satisfaction and contentment. God has given us human life after thousands of births because of our past noble deeds. Instead of thanking him for his blessings, they go cursing Him (God) for no reason which reflects their sick and wavered mindset. Even now a days, persons with paltry and meagre income are living happily. On the other side thousands wealthy persons who suffer from self acquired mental agony live a wretched life. In our ancient Granths, contentment has been described as the top virtue and only solution for a happy, steady and smooth life.

धन से इस तरह भी प्यार न करो की पाप हो जाये।

वेद में मनुष्य को धन ऐश्वर्य का स्वामी बनने के लिये प्रार्थना करने के लिये कहा गया है। पर साथ में यह भी कहा है कि वह यह भी मान कर चलें कि इस सारे धन सम्पदा का मालिक वह ईश्वर है, हमें तों केवल त्यागमय भाव से भोगने का आदेश है। यह तभी सम्भव है जब इस धन को भोगते हुये भौतिक, मानसिक व अध्यात्मिक तीनों पहलुओं के बीच सन्तुल्न बना कर रखें, वरना यह धन पाप की और ले जाता है, जैसा कि अक्सर हम देखते हैं। धन से प्यार स्वभाविक है परन्तु इस तरह भी प्यार न करो की पाप हो जाये, जैसे कि पंचकुला में घटी यह घटना बता रही है।

पंचकुला के एक गांव के एक ही परिवार के चार सदस्यों की, जिस में की एक वृधा के साथ उसके द्विगत बेटे के बच्चे अर्थात उसके दो पोते व एक पोती है, बहुत ही निर्मम हत्या का मामला सामने आया है। इन हत्याओं को अल्ज़ाम देने वाला और कोई नहीं परन्तु उस वृधा की अपनी विवाहिता बेटी है, जिसने की इस काम के लिये कांटरैक्ट किलरज को दस लाख रूपये दिये। कोई सोच सकता है कि कोई बेटी अपनी मां की हत्या करवा सकती है? सचमुच अविश्वसनिय लगता है, परन्तु धन का लोभ ऐसा पाप भी करवा सकता है।

लोभ की प्रकाष्ठा देखिये----वृधा को एनऐच –73 के लिये ऐक्वायर जमीन का 11 करोड़ मुआवजा मिला था। सभी चार बेटीयों को उसने इस धन में से एक– एक करोड़ दे दिया था जो कि हत्या में संलगन बेटी को भी मिला था, बाकी उसने द्विगत बेटे के बच्चे अर्थात उसके दो पोते व एक पोती के नाम कर दिया था। देखने वाली बात जो कि लोभ की प्रकाष्ठा को बताती है वह है किं उसके अपने पति की जमीन की कीमत भी 50 करोड़ से कम नही और वह भी इस हत्या में शामिल थां।

ऐसा तभी होता है जब हम धन कमाते हुये अध्यात्मबाद से दूर हो जातें है। सत्संग और अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय, अध्यात्मवाद का रास्ता है। जब मनुष्य अध्यात्मवाद की और मुख मोड़ लेता है तो काम, क्रोद्ध, लोभ , मोह और अहंकार का अंश उसमें कम होने लगता है और ईश्वरिय गुण, जिन में मुख्य हैं दया, करूणा, सेवा भाव, सन्तोष, जो हमसे कम भाग्यशाली है उन्हें कुछ अपनी सम्पती में से देने की भावना अर्थात दान, ईश्वर में विश्वास, धैर्य, निनम्रता, त्याग की भावना खुद व खुद आने लगती है जो कि पाप पूर्ण प्रवृति से दूर रखती हैं। वेद भगवान कहते है, हे मानव जो भी तेरे पास धन सम्पदा है उसे प्रजापती की समझकर जी।

किसी ने सत्य कहा है,

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाय

"यू कैन विन" के कुछ मुख्य अंश

शिव खेड़ा अपनी पुस्तक "यू कैन विन" के दूसरे अध्याय "सफलता : कामयाबी के उपाय" में बताते हैं कि "हर नतीजे की कोई न कोई वजह होती है। वजह और नतीजे के असूल बीज बोने और फसल काटने के असूलों जैसे ही हैं।" उपरोक्त पुस्तक की रोशनी में यहाँ श्रद्धा और ज्ञान के संबंध में इस नियम को लागू करने पर विचार करते हैं :

- कारण और प्रभाव के नियम के अनुसार सबसे पहले हममें बीज बोने की इच्छा होनी चाहिये अर्थात् मन में श्रद्धा नामक तत्त्व का सबसे पहले विकसित होना अनिवार्य है।
- हम जो बोते हैं वही काटते हैं। आलू बोएँगे तो टमाटर नहीं बटोरेंगे। यथा बीजं तथा निष्पति अर्थात् हम सकारात्मक विश्वास को ही मन में स्थान दें।
- प्रकृति का नियम है पहले बीज बोना पड़ता है बाद में फ़सल प्राप्त होती है। पहले श्रद्धा नामक तत्त्व उत्पन्न करो ज्ञान की प्राप्ति बाद का क़दम है।
- जब हम एक बीज बोते हैं तो उसके पौधे पर एक ही फल अथवा बीज नहीं लगता अपितु असंख्य फल लगते हैं और अनेकानेक बीज उनसे प्राप्त होते हैं।
- श्रद्धा रूपी पौधा यदि एक बार रोपने में सफल हो गए तो उसकी पैदावार का आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते।

सीताराम गुप्ता

RELIGIOUS DISCOURSE STRENGTHENS SPIRITUALISM

Dr. Om Parkash Setia

A young boy came to Saint Kabir and asked, "Guruji! I have acquired sufficient knowledge through my education. I am wise enough and understand very well all the good and bad values of life. Even then, my parents continuously advise me to regularly attend Religious Discourse. When I am so wise and well educated, then what is the need of my attending the Religious Discourse daily?

Saint Kabir, without answering his question orally, picked up a hammer and hit a nearby pitted stanchion. The young boy left unsatisfied. Next day he again came to Saint Kabir and spoke, "Yesterday, I had asked your good self a question, but you did not reply. Please give me the answer today?" Saint Kabir again struck down the stanchion and did not speak a single word. The young boy thought that he, being a Saint, is perhaps in silence mode. The youth again came over the third day and repeated his question. Saint Kabir again struck down the stanchion. Now disappointed, the young boy spoke, "Why are you not responding to my question? I am asking your good self a question for the last three days. Then Saint Kabir said, "I am giving you the answer daily. Every day by hitting down the stanchion with hammer, I am strengthening stanchion's bond with earth. If I do not do it, this stanchion will be pulled out one way or the other either due to the animals pull out efforts or the earth's mobility. This very job is done by the Religious Discourse for us, as it continuously fixes up our mind like stanchion so that our pious spiritual ideas are strengthened. Kabir directed the youth to the right direction. Hearing religious discourse every day deletes untruth and strengthens the truth in our heart. So religious discourse should be an essential and regular part of our life's daily routine.

HUMANITY IS ALL PERVASIVE

Ms Priyambika Sood

In marathon of life, where everybody wants to run fast and reach pinnacle one way or the other, we just don't like to stop and cherish little acts of humanity, which otherwise are the source of eternal happiness and help us to become better human beings. One is always remembered for his good deeds and it is good to understand that there is no better deed than providing your service selflessly for humanitarian causes. Examples of Mother Teresa, Bhagat Pooran Singh and Baba Amte and many others are before us.

Best thing is that humanity transcends barriers of religion, caste, race, color and land created by man as this small anecdote manifests. During our Turkey trip, from Istanbul we went to Edirne, a business hub and a historical town bordering Bulgaria, by Bus. The hotel we had booked was told to be at a walking distance from the Bus stand which prevented us from hiring any Taxi. Very few knew English which was adding to our problem in locating the hotel. Fortunately ne person whom we asked knew English. He was going towards the Bus Stand with his wife and small children. He spoke something to his wife in his language, made them seated on a road side bench and started leading us to the probable site of the Hotel." I don't know the exact location but I have some faint idea. Come with me, it shouldn't take much time. "

By now we had understood that he was walking an extra mile to help us which was making us embarrassed. "Thank you very much for your guidance, we'll manage. You may please go back now. Your wife and small children are alone. To be candid, we are indeed overwhelmed by your spirit of service" , said my father. "Don't say like this. It is my duty. Don't worry about my children and wife. Nothing will happen to them. It is a very safe place. Moreover, we are on leisure trip as today being Friday." He replied. He refused to return back despite our persistent requests and continued with his efforts to locate the hotel. After 15 minutes or so we could see the Board 'Hotel Lemon' and with big smile on our faces thanked him profusely for the trouble he had taken.

During the time we were together, we had tried to know about each other. He was from Bulgaria who was working as a Doctor in Edirne. We were convinced that humanity is all pervasive as is air to breathe. Best thing is that many of the humanitarian acts do not call for spending money. Caring and helping others, whenever and wherever possible, by being ready to forgo our personal interest for a while and having a mindset that God has endowed me with everything sufficiently to share with others, is all that one requires being a humanitarian.

But to have the feeling that we as part of any particular religion, race, caste or country and state are more humane than others can be an obstacle in this noble path. A stranger with his act of humanity can surprise us, as we were. Therefore right thing will be to tread this path with all humility and with a feeling that I am very fortunate to have got the opportunity of being helpful to the needy.

fortunate to make some difference in this vast macrocosm. "You make a living by what you get and make life by what you give," so said Leigh Hughes.

There are two perspectives: spiritual and worldly, from which we will discuss the meaning of life. Let us take these one by one.

1. From the spiritual perspective, there are two generic reasons for reincarnation as stated below.

- **To comply with the give-and-takeaccount, we have with other souls.**
- **To progress spiritually till we attain** Nirvana **i.e. release from the cycle of birth and death.**

2. From the worldly perspective, we adopt a calling to sustain ourselves and fulfil our social responsibilities towards our family and society in general.

श्रीमती ईश्वर हिन्डुजा-----निस्वार्थ सेविका

कोई भी समाज तब तक प्रगतीशील रहता है जब तक उस के साथ निस्वार्थ कार्य करने वाले जुड़े रहते हैं। व्यवसाइक उपदेशकों और भजनोपदेशकों के सहारे आप एक दिन के लिये तो भवनों में दीपों की दिवाली जला सकते हो पर रोज दीप जले उस के लिये निस्वार्थ सेवक सेविकायें ही चाहिये होते हैं।

यह आर्य समाज के लिये भी सत्य है। कभी समय था निस्वार्थ सेवा करने वाले हजारों लाखों में थे पर आज कुछ गिने चुने ही रह गये है, परन्तु हैं जिन्होने अपना जीवन ऋिषी दयानन्द के कार्यो को आगे ले जाने के लिये अर्पण किया हुआ है , उन में एक हैं चण्डीगढ़ आर्य समाजों से जुड़ी श्रीमती ईश्वर हिन्डुजा। जो आर्यजन चण्डीगढ़ में रहतें है, उन्हें परिचय देने की आवश्यकता नहीं, हां हमारे बहुत से पाठक चण्डीगढ़ से बाहर है । सम्भव है उनका परिचय उनको भी प्रोत्साहित करें।

श्रीमती ईश्वर हिन्डुजा 74 वर्षिय हैं परन्तु कार्य करने की क्षमता और उत्साह नवयुवतियों की तरह है। मैं उन्हें लगभग 25 वर्ष से देख रहा हूं, वे विभिन्न रूप सें आर्य समाज के प्रचार में लगी हुई हैं, स्त्रीयों को आर्य समाज के साथ जोड़ने में और जो पहलें से हैं उन्हें जोड़े रखने के लिये वे बहुत मुख्य भूमिका निभा रहीं है। घर घर जा कर हवन करती हैं और आर्य समाज के सिद्वान्तों को बताती है।

श्रीमती ईश्वर हिन्डुजा बहुत विदुषी हैं। हरियाणा सरकार से हैड मिस्टरैस के पद से रिटायर हुई थी और उस के बाद उन्होने और उनके पति श्री रघुनाथ राय आर्य ने आर्य समाज को ही जीवन अर्पण किया है। दिल खोल कर आर्य समाज के कार्यो के लिये दोनो दान भी देते है और आर्य समाज के कार्यो में हिस्सा लेते हैं। यही नहीं, श्रीमती ईश्वर हिन्डुजा आज भी गरीब बच्चों को निशुल्क पढ़ातें है और साथ में शहर के सब से अधिक सकिय स्त्री आर्य समाज सैक्टर –7 के मन्त्री पद की जिम्मेवारियों को बहुत खूब निभा रहीं है।

श्रीमती ईश्वर हिन्डुजा एक बहुत ही प्रभावशाली वक्ता भी हैं व आर्य समाज व वेदों के बारें में ज्ञान से भरपूर हैं यह अलग बात है कि हम उनका लाभ नहीं लेते।

वैदिक थोटस उनके स्वस्थ जीवन और लम्बी आयु के लिये प्रार्थना करता है। उनका मोबाईल नम्बर 9876832757 है।

THE PURPOSE OF LIFE

Prof. (Dr) S.P. Puri

Think about the universe: countless number of asteroids colliding, nebulae forming, constellations, beautiful stars, planets and formations. Without life, without somebody to observe, contemplate, wonder and appreciate this vast, wonderful, stunning universe, the universe will have no purpose. So, in conclusion, does life have a purpose? I think it has two. One is unto itself and the other is to give the universe a purpose.

Life itself is a unique gift from nature to every living creature. Happiness is the aspiration and goal of every human being and it is his inalienable right to pursue it. Furthermore, making others happy preserves personal happiness as when you are good to others, you are best to yourself. Raising the philosophical query as to what is the meaning of life is an attempt to explore the very basics of our existence. This question has engaged the minds of philosophers, theologians, psychiatrists, psychologists and scientists throughout all ages. The interpretations vary in accordance with one's cultural and religious background. It explores various aspects of life from different angles such as life's relationship to right and wrong and pleasure and pain as well as its relationship to ethics and morality. It explores the very concept of The Creator as well as the human body, mind and soul.

The purpose of life has been specified in myriad manners. For example, it is stated that our life is not a personal possession but a racial heritage and has been handed over to us not only for enjoyment but for development as well. Civilizations progress on the shoulders of giants and long years wait before they are born. Thus, it may not fall into the share of everyone but still it is worthwhile to try to contribute towards human progress and even get lost in the attempt than not to endeavor at all; since all of us have the same divine spark within us. By trying to improve the quality of life for others, we are attempting to pay back the debt of gratitude that we owe to the society in general. In case, we are too full of ourselves and only worry for self-aggrandizement, we are totally devoid of our obligation to society and merely exist like a parasite and fungus.

As life, in general, involves lot of struggle for its sustenance, it is often remarked that life is the tendency to develop under the circumstances that tend to suppress it. The progress that humanity records, is always from scaffolding to scaffolding and never in one giant step. Furthermore, there have been occasions when some individuals with vested interests tried to project the viewpoint that life is meaningless, **as stated by Aldous Huxley[4] in 'Confessions of a Professed Atheist'. For the crudely disgruntled individuals, life is a tale told by an idiot full of fury and signifying nothing.** They think that in a dark room, we are trying to catch a grey cat which is not there. Such like statements defy the reality of living and result from desultory vested interests.

In a famous poem, "Psalm of Life" **Henry Wadsworth Longfellow states:**

Life is real, life is earnest
And grave is not its goal
Dust thou art, to dust returnest
Was not spoken of the soul

Simply stated, the purpose of life is to attain perfection and endeavour to live in a manner that makes some difference for others. The true meaning of life is not only to realize the self but to try to understand nature with its complexities and everything surrounding us including other species. Furthermore, learn to share your space and resources with others who are le

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म्।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mrs Pooja Nanda distributing langar to slum children.

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

**(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)**

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.
शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

हरदयाल महाजन

रजिन्दर रानी वर्मा

भारती बहल

डा. अजय गुप्ता

वरिन्द्र भण्डारी

आशा गिल्ल

नीरमल विरमानी

राजेश आर्य

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in